

## Pandit Narendra Sharma पंडित नरेन्द्र शर्मा



Lavanya Shah

Lavanya grew up in Mumbai in an artistic environment. Her father, Pandit Narendra Sharma, was a renowned Hindi poet; her mother, Susheela Sharma, painted with oil and water colour mediums. Lavanya started writing poems when she was 3 years old. फिर गा उठा प्रवसी *Fir Ga Utha Prawasee* (The traveller sings again) is her first book of poems. Her Hindi blog is *Lavanyam -Antarman* (Inner Voice of Lavanya ) लावण्यम् अन्तर्मन् She lives in the US. Her email id is [lavnis@gmail.com](mailto:lavnis@gmail.com).

*Editor's note: This contribution is in Hindi.*

काव्य संग्रह "प्यासा ~ निर्झर"  
की शीर्ष कविता में कवि नरेंद्र कहते हैं,  
"मेरे सिवा और भी कुछ है,  
जिस पर मैं निर्भर हूँ  
मेरी प्यास हो ना हो जग को,  
मैं, प्यासा निर्झर हूँ"

हमारे परिवार के "ज्योति -कलश" मेरे पापा  
और फिल्म "भाभी की चूड़ीयाँ" फिल्म के गीत में,  
"ज्योति कलश छलके" शब्द भी उन्हीं के लिखे हुए हैं  
जिसे स्वर साम्राज्ञी लता दीदी ने भूपाली राग में गा कर  
फिल्मों के संगीत में साहित्य का,  
सुवर्ण सा चमकता पृष्ठ जोड़ दिया!

यही हैं मेरे लिये पापा!  
हमारे परिवार के सूर्य!  
जिनसे हमें ज्ञान, भारतीय वाङ्मय, साहित्य,  
कला, संगीत, कविता तथा शिष्टाचार के साथ  
इन्सानियत का बोध पाठ भी सहजता से मिला -  
ये उन के व्यक्तित्व का सूर्य ही था जिसका प्रभास डल  
"ज्योति कलश" की भाँति, उर्जा स्रोत  
बना हमें सींचता रहा -

मेरे पापा उत्तर भारत, खुर्जा,  
जिल्ला बुलंद शहर के जहाँगीरपुर गाँव के  
पटवारी घराने में जन्मे थे.  
प्रारंभिक शिक्षा खुर्जा में हुई -  
अल्हाबाद विश्वविद्यालय से अँग्रेजी साहित्य में M.A. करनेके बाद,

वे विविध प्रकार की साहित्यिक गतिविधियों से जुड़े रहे  
जैसा यहाँ सुप्रसिद्ध लेखक  
मेरे चाचा जी अमृत लाल नागर जी लिखते हैं,

"अपने छात्र जीवन में ही कुछ पैसे कमाने के लिये  
नरेन्द्र जी कुछ दिनों तक "भारत" के सँपादीय विभाग में काम करते थे.  
शायद "अभ्युदय" के सँपादीकय विभाग में भी उन्होंने काम किया था.

M.A पास कर चुकने के बाद

वह अकेले **भारतीय काँग्रेस कमिटी** के दफ्तर में भी  
हिन्दी अधिकारी के रूप में काम करने लगे.

उस समय जनता राज में राज्यपाल रह चुकनेवाले

**श्री सादिक अली**

(पढ़ें यह आलेख सादिक अली जी द्वारा लिखा हुआ)

<http://antarman-antarman.blogspot.com/2006/12/some-flash-back.html>

और भारत के दूसरे या तीसरे सूचना मंत्री के रूप में काम कर चुकनेवाले

**स्व. बालकृष्ण केसकर** भी उनके साथ काम करते थे.

एक बार मैंने उन दिनों का एक फोटोग्राफ भी बँधु के यहाँ देखा था.

उसी समय कुछ दिनों के लिये वह

**काँग्रेस के अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरु** के कार्यालय के

सचिव भी रहे थे.

इतने प्रतिभाशाली होने के बावजूद उन्होंने कभी,

किसी से किसी प्रकार की मदद नहीं माँगी.

फिल्मों में उन्होंने सफल गीतकार के रूप में

अच्छी ख्याति अर्जित की.

उससे भी अधिक ज्योतीषी के रूप में भी

उन्होंने वहाँ खूब प्रतिष्ठा पायी."

जैसा यहाँ नागर जी चाचा जी ने लिखा है,

पापा कुछ वर्ष आनंद भवन में अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी के हिंदी विभाग से जुड़े और

वहीं से २ साल के लिये, नजरबंदी किये गए -

देवली जेल में भूख हड़ताल से (१४ दिनो तक) ....

जब बीमार हाल में रिहा किए गए तब गाँव,

मेरी दादीजी गंगादेवी से मिलने गये - ---

जहाँ बंदनवारों को सजा कर देशभक्त कवि नरेन्द्र का हर्षोल्लास सहित स्वागत किया गया -

वहीं से श्री भगवती चरण वर्मा जी ("चित्रलेखा" के प्रसिद्ध लेखक) के आग्रह से बम्बई आ बसे -

वहीं गुजराती कन्या **सुशीला** से पतंजी के आग्रह से व आशीर्वाद से पाणि ग्रहण संस्कार सम्पन्न हुए --"

बारात में हिंदी साहित्य जगत और फिल्म जगत की महत्त्व पूर्ण हस्तीयाँ हाजिर थीं --

श्री अमृतलाल नागर - संस्मरण : ~~~~



सुशीला

"खुर्जा कुरु जाँगल का ही बिगडा हुआ नाम है.  
 उनके पिता पंडित पूरनलाल जी गौड जहाँगीरपुर ग्राम के पटवारी थे  
 बडे कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, सात्विक विचारों के ब्राह्मण!  
 अल्पायु में ही उनका देहावसन हो गया था.  
 उनके ताऊजी ने ही उनकी देखरेख की  
 और पालन पोषण उनकी गंगा स्वरुपा माता स्व. गंगादेवी ने ही किया.  
 आर्यसमाज और राष्ट्रीय आंदोलन के दिन थे,  
 इसलिये नरेन्द्र जी पर बचपन से ही सामाजिक सुधारों का प्रभाव पडा,  
 साथ ही राष्ट्रीय चेतना का भी विकास हुआ.  
 नरेन्द्रजी अक्सर मौज में आकर अपने बचपन में याद किया हुआ एक  
 आर्यसमाजी गीत भी गाया करते थे,  
 मुझे जिसकी पंक्ति अब तक याद है -  
 "वादवलिया ऋषियातरे आवन की लोड"

लेकिन माताजी बडी सँस्कारवाली ब्राह्मणी थीं  
 उनका प्रभाव बँधु पर अधिक पडा.

जहाँ तक याद पडता है उनके ताऊजी ने उन्हें  
 गाँव में अँग्रेजी पढाना शुरु किया था  
 बाद में वे खुर्जा के एक स्कूल में भर्ती कराये गये.  
 उनके हेडमास्टर स्वर्गीय जगदीशचंद्र माथुर के पिता  
 श्री लक्ष्मीनारायण जी माथुर थे.  
 लक्ष्मीनारायण जी को तेज छात्र बहुत प्रिय थे.  
 स्कूल मे होनेवाली डिबेटों में वे अक्सर भाग लिया करते थे.  
 बोलने में तेज !  
 इन वाद विवाद प्रतियोगिताओं में वे  
 अक्सर फर्स्ट या सेकंड आया करते थे.  
 जगदीशचंद्र जी माथुर नरेन्द्र जी से आयु मे चार या पाँच साल छोटे थे.  
 बाद में तत्कालीक सूचना मंत्री बालकृष्ण केसकर ने  
 उन्हें आकाशवाणी के डायरेक्टर जनरल के पद पर नियुक्त किया.  
 जगदीशचंद्र जी सुलेखक एवं नाटककार भी थे  
 तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे पढते समय भी  
 उनका श्रेष्ठिय सुमित्रा नंदन पंत और नरेन्द्र जी से बहुत संपर्क रहा.  
 वह बँधुको सदा "नरेन्द्र भाई" ही कहा करते थे --  
 अवकाश प्राप्त करने के बाद, एक बार, मेरी उनसे  
 दिल्ली में लंबी और आत्मीय बातें हुई थी  
 उन्होंने ही मुझे बताया था कि  
 उनके स्वर्गीय पिताजी ने ही उन्हें (बँधु को) सदा  
 "नरेन्द्र भाई" कहकर ही संबोधित करने का आदेश दिया था.

नरेन्द्र जी इलाहाबाद में रहते हुए ही  
कविवर बच्चन, शमशेर बहादुर सिंह, केदार नाथ अग्रवाल  
और श्री वीरेश्वर से जो बाद में "माया" के संपादक हुए.

उनका घनिष्ठ मैत्री संबंध स्थापित हो गया था.  
ये सब लोग श्रेष्ठ पतंजी के परम भक्त थे.  
और पतंजी का भी बंधु के प्रति एक अनोखा वात्सल्य भाव था.

वह मैंने पतंजी के बम्बई आने और  
बंधु के साथ रहने पर अपनी आँखों से देखा था.  
नरेन्द्र जी के खिल्लदडेपन और हँसी - मजाक भरे स्वभाव के कारण  
दोनों में खूब छेड छाड भी होती थी.

किन्तु, यह सब होने के बावजूद दोनों ने एक दूसरे को अपने ढँग से खूब प्रभावित किया था.

नरेन्द्र जी की षष्ठिपूर्ति के अवसर पर, बंबईवालों ने  
एक स्मरणीय अभिनंदन समारोह का आयोजन किया था.

तब तक सुपर स्टार चि. अमिताभ के पिता की हैसियत से  
आदरणीय बच्चन भाई भी बम्बई के निवासी हो चुके थे.

उन्होंने एक बड़ा ही मार्मिक और स्नेह पूर्ण भाषण दिया था, जो  
नरेन्द्र के अभिनंदन ग्रंथ "ज्योति ~ कलश" में छपा भी है  
- उक्त अभिनंदन समारोह में किसी विद्वान ने  
नरेन्द्र जी को प्रेमानुभूतियों का कवि कहा था!

इस बात को स्वीकार करते हुए भी बच्चन भाई ने  
बड़े खुले दिल से यह कहा था कि  
अपनी प्रेमाभिव्यक्तियों में भी नरेन्द्र जी ने  
जिन गहराइयों को छुआ है और सहज ढँग से व्यक्त किया  
वैसा छायावाद का अन्य कोई कवि नहीं कर पाया!

**Click to read --**

[\(" पंडित नरेन्द्र शर्मा की " षष्ठिपूर्ति " के अवसर पर डा. हरिवंश राय बच्चन के भाषण से साभार उद्धृत \)](#)



स्वर साम्राज्ञी सुश्री लता मंगेशकर जी पंडित नरेन्द्र शर्मा जी को षष्ठीपूर्ति पर फूलों की माला पहना रही हैं



Bachchanji, Padma Sachdev , Lata Ji & Susheela Sharma in front row

**भारत कोकिला श्रीमती सुब्बुलक्ष्मी जी की एक फिल्म**

**"मीरा" हिन्दी में डब कर रहा था**

और इस निमित्त से वह और उनके पति **श्रीमान् सदाशिवम् जी**

बैठे ही रह रहे थे।

बँधुवर नरेन्द्रजी ने उक्त फिल्म के कुछ तमिल गीतों को

हिन्दी में इस तरह रुपान्तरित कर दिया कि

वे मेरी डबिंग में जुड़ सकें।

सदाशिवं जी और उनकी स्वनामधन्य पत्नी

तथा तथा बेटी राधा हम लोगों के साथ



Poet Sumitra Nandan Pant (left) with Dulha Narendra (centre)

व्यावसायिक नहीं किन्तु पारिवारिक प्रेम व्यवहार करने लगे थे.

सदाशिव जी ने बंबई में ही एक नयी शेवरलेट गाडी खरीदी थी.

वह जोश में आकर बोले,

"इस गाडी में पहले हमारा यह वर ही यात्रा करेगा!"

गाडी फूलों से खूब सजाई गई

उसमें वर के साथ माननीय सुब्बुलक्ष्मी जी व प्रतिभा बैठीं ।  
समधी का कार्य श्रधेय सुमित्रनंदन पंत ने किया।

बडी शानदार बारात थी!

बंबई के सभी नामचीन्ह फिल्मस्टार और

नृत्य - समाट उदयशंकर जी उस वर यात्रा में सम्मिलित हुए थे.

बडी धूमधाम से विवाह हुआ.

मेरी माता बंधु से बहुत प्रसन् थी

और पंत जी को, जो उन दिनों बंबई में ही नरेन्द्र जी के साथ रहा करते थे, वह देवता के समान पूज्य मानती थी ।  
मुझसे बोली,

"नरेन्द्र और बहु का स्वागत हमारे घर पर होगा!"

दक्षिण भारत कोकिला : सुब्बुलक्ष्मीजी, सुरैयाजी, दीलिप कुमार, अशोक कुमार, अमृतलाल नागर व श्रीमती प्रतिभा नागरजी, भगवती बाब्य, सपत्रीक, अनिल बिश्वासजी, गुरु दत्तजी, चेतनानंदजी, देवानंदजी इत्यादी सभी इस विलक्षण विवाह में सम्मिलित हुए थे और नई दुल्हन को कुमकुम के थाल पर पग धरवा कर गृह प्रवेश करवाया गया उस समय सुरैया जी तथा सुब्बुलक्ष्मी जी मे मंगल गीत गाये थे और जैसी बारात थी उसी प्रकार बम्बई के उपनगर खार में, १९ वे रास्ते पर स्थित उनका आवास भी बस गया

न्यू योर्क भारतीय भवन के संचालक श्रीमान डो. जयरामनजी के शब्दों में कहूँ

तो "हिंदी साहित्य का तीर्थ - स्थान"

बम्बई जैसे महानगर में एक शीतल सुखद धाम में परिवर्तित हो गया --

मेरी अम्मा स्व. श्रीमती सुशीला नरेन्द्र शर्मा का एक सँस्मरण है~~

जब मुझसे बडी बहन वासवी का जन्म हो गया था

तब पापा जी और अम्मा सुशीला माटुंगा तैकलवाडी के घर पर रहते थे

इसी २ कमरे वाले फ्लैट में कवि श्रेष्ठ श्री सुमित्रा नंदन पंत जी भी

पापा जी के साथ कुछ वर्ष रह चुके थे -

एक दिन पापाजी और अम्मा बाज़ार से सौदा लिये

किराये की घोडागाडी से घर लौट रहे थे -

अम्मा ने बडे चाव से एक बहुत महँगा छाता भी खरीदा था -

जो नन्ही वासवी (मेरी बड़ी बहन) और साग सब्जी उतारने में  
अम्मा वहीं भूल गई -

जैसे ही घोडागाडी ओझल हुई कि वह छाता याद आ गया!

पापा जी बोले,

"सुशीला, तुम वासवी को लेकर घर जाओ,

वह दूर नहीं गया होगा

मैं अभी तुम्हारा छाता लेकर आता हूँ !"

अम्मा ने बात मान ली और कुछ समय बाद

पापा जी छाता लिये आ पहुँचे!

कई बरसों बाद अम्मा को यह रहस्य जानने को मिला कि

पापा जी दादर के उसी छातेवाले की दुकान से

हुबहु वैसा ही एक और नया छाता खरीद कर ले आये थे

ताकि अम्मा को दुख ना हो!

इतने संवेदनाशील और दूसरों की भावनाओं का आदर करनेवाले,

उन्हें समझनेवाले भावुक कवि हृदय के इन्सान थे मेरे पापा जी!



पंडित नरेन्द्र शर्मा, श्रीमती सुशीला शर्मा तथा २ बहनों वासवी  
(गोद में है शौनक छोटा सा और पुत्र मौलिक) बाँधवी  
(बच्चे- कुँजम, दीपम ) लावण्या  
( बच्चे -सिँदुर व सोपान ) और भाई परितोष घर के बारामदे में

(अ) हम बच्चे दोपहरी में जब सारे बडे सो रहे थे,  
पडोस के माणिक दादा के घर से कचचे पक्के आम तोड कर

किलकारीयाँ भर रहे थे कि,  
 अचानक पापाजी वहाँ आ पहुँचे ----  
 गरज कर कहा,  
 "अरे! यह आम पूछे बिना क्यों तोडे ?  
 जाओ, जाकर माफी माँगो और फल लौटा दो"  
 एक तो चोरी करते पकडे गए और उपर से माफी माँगनी पडी!!!  
 - पर अपने और पराये का भेद आज तक भूल नहीं पाए  
 -- यही उनकी शिक्षा थी --

(ब) मेरी उम्र होगी कोई ८ या ९ साल की  
 - पापाजी ने, कवि शिरोमणि कवि कालिदास की कृति  
 "मेघदूत" से पढनेको कहा --  
 संस्कृत कठिन थी परंतु, जहाँ कहीं , मैं लडखडाती,  
 वे मेरा उच्चारण शुद्ध कर देते --  
 आज, पूजा करते समय, हर श्लोक के साथ ये पल याद आते हैं --

(क) मेरी पुत्रा सिँदूर के जन्म के बाद जब भी रात को उठती,  
 पापा, मेरे पास सहारा देते, मिल जाते  
 -- मुझसे कहते, "बेटा, मैं हूँ यहाँ" ,.....  
 आज मेरी बिटिया की प्रसूती के बाद,  
 यही वात्सल्य उँडेलते समय,  
 पापाजी की निस्छल, प्रेम मय वाणी और  
 स्पर्श का अनुभव हो जाता है .  
 जीवन अतित के गर्भ से उदित होकर,  
 भविष्य को सँजोता आगे बढ रहा है -

कुछ और यादें हैं जिन्हें आप के साथ साझा कर रही हूँ -

\* काव्यमय बानी \*

मैं जब छोटी बच्ची थी, तब अम्मा व पापा जी का कहना है कि,  
 अक्सर काव्यमय वाणी में ही अपने विचार प्रकट किया करती थी!

अम्मा कभी कभी कहती कि,

"सुना था कि मयुर पक्षी के अँडे, रँगों के मोहताज नहीं होते!  
 उसी तरह मेरे बच्चे पिता की काव्य सम्पत्ति  
 विरासत में साथ लेकर आये हैं!"

यह एक माँ का गर्व था जो छिपा न रह पाया होगा. या,



उनकी ममता का अधिकार उन्हें मुखर कर गया था शायद !  
कौन जाने ?

परंतु आज जो मेरी अम्मा ने मुझे बतलाया था  
उसे आप के साथ बाँट रही हूँ -  
तो सुनिये,

एक बार मैं, मेरी बचपन की सहेली लता  
बड़ी दीदी वासवी, - हम तीनों खेल रहे थे.  
वसंत ऋतु का आगमन हो चुका था  
और होली के उत्सव की तैयारी  
बंबई शहर के गली मोहोल्लों में,  
जोर शोरों से चल रही थीं -  
खेल खेल में लता ने,  
मुझ पर एक गिलास पानी फेंक कर मुझे भीगो दिया!  
मैं भागे भागे अम्मा पापाजी के पास दौड़ कर पहुँची  
और अपनी गीली फ्रोक को शरीर से दूर खेंचते हुए बोली,  
"पापाजी, अम्मा! देखिये ना!  
मुझे लताने ऐसे गिला कर दिया है  
जैसे मछली पानी में होती है !"

इतना सुनते ही, अम्मा ने मुझे वैसे,  
गिले कपड़ों समेत खींचकर  
प्यार से गले लगा लिया!  
बच्चों की तोतली भाषा, सदैव बड़ों का मन मोह लेती है.

माता, पिता को अपने शिशुओं के प्रति  
ऐसी उत्कट ममता रहती है कि, उन्हें हर छोटी सी बात,  
विद्वत्तापूर्ण और अचरजभरी लगती है  
मानों सिर्फ उन्हीं के सँतान  
इस तरह बोलते हैं - चलते हैं, दौड़ते हैं -  
पापा भी प्रेमवश, मुस्कुरा कर पूछने लगे,

"अच्छा तो बेटा,  
मछली ऐसे ही गिली रहती है पानी में?  
तुम्हें ये पता है? "  
"हाँ पापा, एक्वेरीयम (मछलीघर ) में देखा था ना हमने!"  
मेरा जवाब था --

हम बच्चे, सब से बड़ी वासवी, मैं मैं मँझली लावण्या, छोटी बाँधवी व भाई परितोष

अम्मा पापा की सुखी, गृहस्थी के छोटे, छोटे स्तंभ थे!  
 उनकी प्रेम से सींची फुलवारी के हम महकते हुए फूल थे!  
 आज जब ये याद कर रही हूँ तब प्रिय वासवी और वे दोनों ,  
 हमारे साथ स -शरीर नहीं हैं !  
 उनकी अनमोल स्मृतियों की महक  
 फिर भी जीवन बगिया को महकाये हुए है.

हमारे अपने शिशु बड़े हो गये हैं -  
 -पुत्री सौ. सिंदूर का पुत्र नोआ ३ साल का हो गया है!  
 फुलवारी में, आज भी, फूल महक रहे हैं!

~~~~~  
 साहित्य मनीषीकी अनोखी सृजन यात्रा निर्बाध गति से ६ दशकों को पार करती हुई,

महाभारत प्रसारण १९८९ , ११ फरवरी की काल रात्रि के ९ बजे तक चलती रही ---  
 डा. राही मासूम रज़ा साब ने यह भावभीनी कविता लिखी है -

जिसे सुनिये चूँके आज, रज़ा साब भी हमारे बीच  
 अब स-शरीर नहीं रहे ! :-)

"वह पान भरी मुस्कान"

वह पान भरी मुस्कान न जाने कहाँ गई ?

जो दफ्तर में, इक लाल गदेली कुर्सी पर,  
 धोती बाँधे, इक सभ्य सिल्क के कुर्ते पर,  
 मर्यादा की बँडी पहने, आराम से बैठा करती थी,  
 वह पान भरी मुस्कान तो उठकर चली गई!  
 पर दफ्तर में, वो लाल गदेली कुर्सी अब तक रक्खी है,  
 जिस पर हर दिन, अब कोई न कोई आकर बैठ जाता है  
 खुद में भी अक्सर बैठा हूँ  
 कुछ मुझ से बड़े भी बैठे हैं,  
 मुझसे छोटे भी बैठे हैं,  
 पर मुझको ऐसा लगता है  
 वह कुरसी लगभग एक बरस से खाली है !

\*\*\*\*\*

यह मेरा परम सौभाग्य है और मैं, लावण्या, सौभाग्यशाली हूँ  
 कि मैं पुण्यशाली , सँत प्रकृति कवि हृदय के लहू से सिँचित,  
 उनके जीवन उपवन का एक फूल हूँ --  
 उन्हींके आचरणसे मिली शिक्षा व सौरभ सँस्कार,

मनोबलको, हर अनुकूल या विपरित जीवन पडाव पर  
मजबूत किये हुए, जी रही हूँ !

उनसे ही ईश्वर तत्व क्या है उसकी झाँकी हुई है -  
- और, मेरी कविता ने प्रणाम किया है --

"जिस क्षणसे देखा उजियारा,  
टूट गे रे तिमिर जाल !  
तार तार अभिलाषा तूटी,  
विस्मृत घन तिमिर अँधकार !  
निर्गुण बने सगुण वे उस क्षण ,  
शब्दों के बने सुगँधित हार !  
सुमन ~ हार, अर्पित चरणों पर,  
समर्पित, जीवन का तार ~ तार !!  
( गीत रचना ~ लावण्या )

प्रथम कविता ~ संग्रह, "फिर गा उठा प्रवासी" बडे ताऊजीकी बेटी श्रीमती गायत्री,  
शिवशँकर शर्मा "राकेश" जी के सौजन्यसे, तैयार है -

--"प्रवासी के गीत" पापाजी की सुप्रसिद्ध पुस्तक और  
खास उनके गीत "आज के बिछुडे न जाने कब मिलेंगे? "  
जैसी अमर कृति से हिंदी साहित्य जगत से संबँध रखनेवाले  
हर मनीषी को यह बताते अपार हर्ष है कि,  
'यह मेरा विनम्र प्रयास, मेरे सुप्रतिष्ठित कविर्मनीष पिताके प्रति  
मेरी निष्ठा के श्रद्धा सुमन स्वर स्वरूप हैं -  
शायद मेरे लहू में दौड़ते उन्ही के आशिष ,  
फिर हिलोर लेकर, माँ सरस्वती की पावन गँगाको,  
पुनःप्लावित कर रहे हों क्या पता ?❖

© Lavanya Shah लावण्या शाह 2009